ग्यारह

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा

The Baptism in the Holy Spirit

प्रेरितों के काम पुस्तक से पढ़ने पर, कोई भी प्रत्येक पृष्ठ पर आरम्भिक कलीसिया में पवित्र आत्मा के कार्य के प्रमाण को देख सकता है। प्रेरितों के काम पुस्तक से पवित्र आत्मा के कार्य को हटा लेने पर आपके पास कुछ भी नहीं बचता है। वास्तव में, उसने प्रथम शिष्यों को ''जगत को उलटा पुलटा'' करने में समर्थ किया (देखें प्रेरित. 17:6)।

आज संसार के जिन भागों में कलीसियाओं का विकास तेज़ी से हो रहा है, ये वे स्थान हैं जहां यीशु के अनुयायी पवित्र आत्मा के द्वारा तैयार व समर्थ किये जाते हैं। इससे हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। पवित्र आत्मा उस कार्य को 'दस सैकेण्ड' में पूरा कर सकता है जिसे पूरा करने का प्रयास हम दस हज़ार वर्षों से कर रहे होते हैं। अत: शिष्य निर्माता सेवक के लिए उसे समझना अत्यन्त ज़रूरी है जो पवित्रशास्त्र विश्वासियों के जीवनों और सेवकाई में पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में सिखाता है।

प्रेरितों के काम पुस्तक में, हम बार-बार विश्वासियों के पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने और सेवकाई के लिए समर्थ किये जाने के बारे में उदाहरणों को पाते हैं। हमें इस विषय का अध्ययन करने के लिए समझदार होना होगा, जिससे हम यदि संभव हो तो वह अनुभव कर सकें जिसे उन्होंने अनुभव किया और पवित्र आत्मा की उस चमत्कारी सहायता का आनन्द ले सकें जिसका आनन्द उन्होंने लिया था। यद्यपि कुछ का दावा है कि पवित्र आत्मा के इन चमत्कारी कार्यों ने मूल प्रेरितों के युग को सीमित कर दिया था, इस तरह के विचार का मुझे कोई पवित्रशास्त्रीय, ऐतिहासिक या वैद्य समर्थन नहीं मिला है। यह अविश्वास से जन्मी कल्पना है। परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करनेवाले उन प्रतिज्ञाओं की आशीषों को अनुभव करेंगे।

अविश्वासी इस्राएली जो कि प्रतिज्ञा की भूमि में प्रवेश नहीं कर पाए थे, उन्हीं के समान जो आज परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास नहीं करते वे उस सब में प्रवेश नहीं कर पाएंगे जो परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया है। आप किस श्रेणी में आते हैं? व्यक्तिगत रूप से मैं विश्वासियों में हूं।

पवित्र आत्मा के दो कार्य

Two Works by the Holy Spirit

प्रभु यीशु पर सच में विश्वास करने वाले व्यक्ति ने अपने जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य का अनुभव किया है। उसके भीतरी व्यक्तित्व, या आत्मा को पवित्र आत्मा के द्वारा पुनरुज्जीवित किया गया है (देखें तीतु. 3 : 15), और अब पवित्र आत्मा उसके साथ रहता है (देखें रोमि. 8:9; 1कुरि. 6:19)। उसका ''आत्मा से जन्म'' हुआ है (यूहन्ना 3:5)।

इसे न समझते हुए, बहुत से कैरिस्मेटिक और पेंटिकोस्टल मसीहियों ने ऐसे विश्वासियों को यह बताने में गलती की है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और अन्य भाषा में न बोलने तक उनके पास पवित्र आत्मा नहीं हो सकता। बहुत से गैर-कैरिस्मेटिक पेंटिकोस्टल विश्वासियों में कुछ कैरिस्मेटिक/पेंटिकोस्टल विश्वासियों की तुलना में पवित्र आत्मा के वास करने के अनुभव के अधिक प्रमाण मिलते हैं। वे गलातियों 5:22-23 में पौलुस द्वारा सूचीगत किये गए आत्मा के फलों को इतनी अधिक मात्रा में व्यक्त करते हैं जो पवित्र आत्मा के वास करने के बिना होना संभव नहीं है।

तौभी, एक व्यक्ति के आत्मा में *जन्म* लेने पर इस बात की गारंटी नहीं होती कि उसका पवित्र आत्मा में *बपतिस्मा* भी हुआ है। बाइबल के अनुसार, पवित्र आत्मा से जन्म लेना और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाना दो अलग चीज़ें हैं।

इस विषय को प्रगट करना आरम्भ करने पर, आइये सबसे पहले उस पर ध्यान दें जो यीशु ने सामरिया के कुएं में एक उद्धार न पाई स्त्री से पवित्र आत्मा के बारे में कहा था:

> यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; ''मुझे पानी पिला'' तो तू उससे मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता... जो कोई यह जल (कुएं का) पीएगा वह फिर पियासा होगा। परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा (यूहन्ना 4:10, 13-14)।

यह परिणाम निकालना उचित प्रतीत होता है कि यीशु ने जिस जीवित जल के

बारे में बोला वह पवित्र आत्मा को व्यक्त करता है जो कि विश्वास करने वालों में वास करता है। यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु ने बाद में, इसी वाक्यांश ''जीवित जल'' का प्रयोग किया, और इसमें संदेह नहीं कि वह पवित्र आत्मा के बारे में बोल रहा था।

> फिर पर्व के अन्तिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, ''यदि कोई पियासा हो तो मेरे पास आकर पीए, जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी'।'' उसने *यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा,* जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे, क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तब अपनी महिमा को न पहुंचा था (यूहन्ना 7:37-39, पर बल दिया गया है)।

इस घटना में यीशु ने जीवित जल के ''कुएं के पानी के रूप में उमड़ने'' के बारे में नहीं बोला था। इसके विपरीत, इस बार जीवित जल *नदियां* बन जाता है जो पीनेवाले के भीतर बहती हैं।

यूहन्ना के सुसमाचार से दोनों समान परिच्छेद आत्मा में जन्म लेने और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के बीच के अन्तर को खूबसूरती से व्यक्त करते हैं। पवित्र आत्मा में जन्म लेना प्राथमिक रूप से नया जन्म पानेवाले के लिए लाभदायक है, ताकि वह अनन्त जीवन का आनन्द ले सके। जब एक व्यक्ति का आत्मा में जन्म होता है तब वह पवित्र आत्मा को ग्रहण करनेवाला हो जाता है जो उसे अनन्त जीवन देती है।

तथापि, पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेना प्राथमिक रूप में दूसरों के लाभ के लिए है, क्योंकि यह विश्वासियों को आत्मा की सामर्थ से दूसरे लोगों की सेवा करने को तैयार करता है। ''जीवित जल की नदियां'' आत्मा की सामर्थ से परमेश्वर की आशीषों को दूसरों के लिए लाते हुए उनके भीतर बहने लगेंगी।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा क्यों ज़रूरी है

Why the Baptism in the Holy Spirit is Needed

दूसरों की सेवा करने के लिए हमें पवित्र आत्मा की अत्यधिक आवश्यकता है। उसकी सहायता के बिना हम सभी जाति के लोगों को शिष्य बनाने की अपेक्षा नहीं कर सकते। इसी कारण यीशु ने विश्वासियों को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देने की प्रतिज्ञा की ताकि संसार सुसमाचार को सुने। उसने अपने शिष्यों से कहा–

> और देखो जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा, और जब तक तुम स्वर्ग से *सामर्थ* न पाओ, तब तक तुम

> इसी नगर में ठहरे रहो (लूका 24:49, पर बल दिया गया है)।

लूका भी यीशु के कथन का विवरण देता है:

> उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। परन्तु *जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे;* और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरित. 1:7-8, पर बल दिया गया है)।

यीशु ने अपने शिष्यों को तब तक यरूशलेम को न छोड़ने को कहा जब तक कि वे 'स्वर्ग से सामर्थ' को नहीं पा लेते। वह जानता था कि अन्यथा वे सामर्थहीन होंगे, निश्चित रूप में उसके द्वारा दिये गए कार्य को पूरा नहीं कर पाएंगे। तौभी, हम इस पर ध्यान दें कि एक बार उनके पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के पश्चात् परमेश्वर ने सुसमाचार को फैलाने में उनका अलौकिक रूप से प्रयोग किया।

संसार के करोड़ों मसीहियों ने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के पश्चात्, सामर्थ के एक नये आयाम का अनुभव किया है, विशेष रूप से उद्धार न पाए हुओं में गवाही देते हुए। उन्होंने अपने शब्दों को अधिक बाध्य कराने वाला पाया और उन्होंने धर्मशास्त्र से उसे उद्धृत किया जिसे वे नहीं जानते थे। कुछ ने स्वयं को प्रचार सेवा के लिए बुलाया गया और दान-प्राप्त अुनभव किया। कुछ ने स्वयं को परमेश्वर द्वारा उसी तरह से प्रयुक्त किया गया अनुभव किया जैसा उसने आत्मा के विविध अलौकिक वरदानों में किया था। उनका अनुभव पूरी तरह से बाइबल पर आधारित है। उनका विरोध नहीं होता। वास्तव में, ये परमेश्वर से लड़ रहे हैं।

हमें इससे आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि हमें मसीह की नकल करने के साथ-साथ उसके पवित्र आत्मा के अनुभव की नकल करने को भी बुलाया गया है। उसके मरियम के गर्भ में आने पर निस्संदेह उसका पवित्र आत्मा से ही जन्म हुआ था (देखें मत्ती 1:20)। आत्मा से जन्म लेने के बाद अपनी सेवकाई का आरम्भ करने से पूर्व उसका बपतिस्मा पवित्र आत्मा में हुआ था (देखें मत्ती 3:16)। यदि यीशु को अपनी सेवकाई के लिए तैयार होने को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने की ज़रूरत थी, तो हमें कितनी अधिक होगी?

आत्मा में बपतिस्मे का आरम्भिक प्रमाण

The Initial Evidence of the Baptism in the Spirit

एक विश्वासी के पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के पश्चात् उसके अनुभव का आरम्भिक प्रमाण होगा कि वह नई भाषा में बोलेगा जिसे पवित्रशास्त्र ''अन्य भाषा'' बताता है। अनगिनत पवित्रशास्त्र के पद इस सच्चाई का समर्थन करते हैं। आइये उन पर ध्यान दें।

सर्वप्रथम, उठाए जाने के प्रथम अन्तिम क्षणों में यीशु ने कहा कि विश्वासियों का एक चिन्ह होगा कि वे अन्य भाषा में बोलेंगे।

> तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। *और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे* कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। *नई-नई भाषा बोलेंगे* (मरकुस 16:15-17, पर बल दिया गया है)।

कुछ टिप्पणीकर्त्ताओं का कहना है कि ये पद हमारी बाइबल में नहीं होने चाहिए क्योंकि नये नियम की कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में उन्हें शामिल नहीं किया गया। तौभी, बहुत सी प्राचीन हस्तलिपियों में ये पाए जाते हैं, और मैंने जितने भी अंग्रेज़ी अनुवादों को पढ़ा है उनमें से किसी ने भी उन्हें छोड़ा नहीं है। इसके अतिरिक्त, यीशु ने जो कुछ भी इन पदों में कहा वह प्रेरितों के काम पुस्तक में वर्णित आरम्भिक कलीसिया के अनुभव के साथ सही-सही संबन्धित है।

प्रेरितों के काम पुस्तक में विश्वासियों के पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के पांच उदाहरण मिलते हैं। आइये सभी पांचों पर विचार करें और ऐसा करते हुए हम लगातार दो प्रश्न करते रहेंगे: (क) क्या पवित्र आत्मा में बपतिस्मा उद्धार का उत्तरकालीन अनुभव था? और (2) क्या इसे प्राप्त करनेवाले नई भाषाओं में बोलते थे? यह आज विश्वासियों के लिए परमेश्वर की इच्छा को जानने में हमारी सहायता करेगा।

यरूशलेम

Jerusalem

पहला उदाहरण प्रेरितों के काम 2 में पाया जाता है जब पिन्तेकुस्त के दिन एक सौ बीस शिष्यों को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा दिया गया था:

> जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। *और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य भाषा बोलने लगे।*

इसमें कोई संदेह नहीं कि इस समय से पूर्व एक सौ बीस विश्वासी पहले से ही उद्धार पाने के साथ साथ नया जन्म पा चुके थे अत: उन्होंने उद्धार के पश्चात् निश्चित रूप में पवित्र आत्मा में बपतिस्मे का अनुभव प्राप्त किया था। उनके लिए इस समय

से पूर्व पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेना असंभव रहा होगा, क्योंकि उस दिन तक पवित्र आत्मा कलीसिया को नहीं दिया गया था।

अन्य भाषाओं में बोलने का चिन्ह इसके साथ-साथ था।

सामरिया

Samaria

विश्वासियों के पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने का दूसरा उदाहरण प्रेरितों के काम 8 में पाया जाता है, जब फिलिप्पुस ने सामरिया नगर में जाकर सुसमाचार का प्रचार किया:

> परन्तु जब उन्होंने (सामरियों ने) फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उन के पास भेजा। और उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था (प्रेरित. 8:12, 14-16)।

सामरी मसीहियों ने अपने उद्धार के पश्चात् द्वितीय अनुभव के रूप में पवित्र आत्मा में बपस्तिमे का स्पष्ट रूप से अनुभव किया था। बाइबल स्पष्टता से बताती है कि पतरस और यूहन्ना के पहुंचने से पहले, सामरियों ने पहले से ही ''परमेश्वर के वचन को ग्रहण'' किया था, सुसमाचार में विश्वास किया था और पानी में बपतिस्मा लिया था। तौभी, जब पतरस और यूहन्ना उनके लिए प्रार्थना करने को आए, पवित्रशास्त्र बताता है इस तरह से ''उन्होंने पवित्र आत्मा को प्राप्त किया।'' यह कैसे स्पष्ट हो सकता है?

क्या सामरी विश्वासियों ने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के पश्चात् नई भाषाओं के बोलने पर विश्वास किया था? बाइबल इस बारे में नहीं बताती, लेकिन यह बताती है कि उनके साथ कुछ अद्‌भुत हुआ था। जब शमौन नामक एक व्यक्ति ने सामरी मसीहियों पर हाथ रखने पर अद्‌भुत कार्य को होते देखा तो उसने भी पवित्र आत्मा प्रदान करने की योग्यता को खरीदना चाहा।

> तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया। जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है तो उनके पास रुपये लाकर कहा कि ''यह अधिकार मुझे भी दो कि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए'' (प्रेरित. 8:17-19)।

शमौन ने ऐसा क्या देखा जिसने उसे इतना अधिक आकर्षित किया? वह पहले से ही अनगिनत चमत्कार देख चुका था, जैसे लोगों का दुष्टात्माओं से छुड़ाया जाना और पक्षाघात के रोगियों और लंगड़ों को चमत्कारी रूप से चंगाई मिलना (देखें प्रेरित. 8:9-10)। इसी कारण, पतरस और यूहन्ना के प्रार्थना करने पर उसने जो देखा उसका वह गवाह होने के कारण निश्चय ही दर्शक रहा होगा। यद्यपि हम निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कह सकते हैं, तौभी यह सोचना उचित प्रतीत होता है कि वह उसी प्रतीयमान का गवाह था जो प्रेरितों के काम पुस्तक में मसीहियों के पवित्र आत्मा को प्राप्त करने पर हुआ था। उसने उन्हें अन्य भाषा में बोलते हुए देखा और सुना।

दमिश्क में शाऊल

Saul in Damascus

प्रेरितों के काम पुस्तक में किसी के द्वारा पवित्र आत्मा को ग्रहण करने का तीसरा विवरण तर्शिश के शाऊल का है जिसे बाद में प्रेरित पौलुस के रूप में जाना गया। उसे दमिश्क के मार्ग पर बचाया गया था, जहां वह अस्थाई रूप से अंधा भी हो गया था। उसके परिवर्तन के तीन दिन बाद, हनन्याह नामक एक व्यक्ति को उसके पास भेजा गया था:

> तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, ''हे भाई शाऊल, प्रभु अर्थात् यीशु, जो इस रास्ते में, जिससे तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।'' और तुरन्त उसकी आंखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया (प्रेरित. 9:17-18)।

इसमें संदेह नहीं कि हनन्याह के उसके लिए प्रार्थना करने को आने से पूर्व शाऊल का फिर से जन्म हो चुका था। दमिश्क के मार्ग पर ही उसने प्रभु यीशु पर विश्वास कर लिया था, और उसने तत्काल ही अपने नये प्रभु के निर्देशों का पालन भी किया था। इसके अतिरिक्त, हनन्याह ने शाऊल से पहली बार मिलने पर उसे *भाई* शाऊल कहा। इस पर ध्यान दें कि हनन्याह ने शाऊल को बताया कि वह इसलिए आया वह अपनी दृष्टि को फिर से पाए *और* पवित्र आत्मा से भर जाए। अत: शाऊल ने अपने उद्धार के तीन दिन बाद पवित्र आत्मा से भरे जाकर बपतिस्मा पाया।

पवित्रशास्त्र पौलुस के पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने की वास्तविक घटना का वर्णन नहीं करता, परन्तु यह हनन्याह के उस तक पहुंचने के कुछ ही समय पश्चात् हुआ होगा, जहां शाऊल ठहरा हुआ था। वहां निस्संदेह पौलुस कुछ सीमा तक अन्य भाषा में बोला था, क्योंकि उसने बाद में 1 कुरिन्थियों 14:18 में कहा, ''मैं अपने

परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि मैं तुम सब से अधिक अन्य अन्य भाषा में बोलता हूं।''

कैसरिया
Caesarea

विश्वासियों के पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने का चौथा विवरण प्रेरितों के काम 10 में मिलता है। प्रेरित पौलुस को ईश्वरीय रूप में कैसरिया के रहनेवाले कुरनेलियुस के घराने को सुसमाचार का प्रचार करने को नियुक्त किया गया था। जैसे ही पतरस ने प्रगट किया कि उद्धार को यीशु में विश्वास करने के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, उसके समस्त अन्यजाति श्रोताओं ने उसी क्षण विश्वास में होकर प्रतिक्रिया दी, और पवित्र आत्मा उन पर आ गया:

> पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। और जितने खतना किये हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उँडेला गया है। क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा; ''क्या कोई जल की रोक कर सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारी नाई बपतिस्मा पाया है?'' और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए (प्रेरित. 10:44-48अ)।

अत: ऐसा प्रतीत होता है कि कुरनेलियुस के घराने के सदस्य जो यीशु में सर्वप्रथम अन्यजाति विश्वासी थे, उन्होंने फिर से जन्म लेने के साथ-साथ पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भी पाया था।

उसके आस-पास के पदों की जांच करने और ऐतिहासिक संदर्भों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर ने पतरस और उसके सह-विश्वासियों के अन्यजाति विश्वासियों को पवित्र आत्मा प्राप्त करने हेतु हाथ रखे जाने की प्रतीक्षा क्यों नहीं की। पतरस और अन्य यहूदी विश्वासियों को इस पर विश्वास करने में बहुत कठिनाई हुई कि अन्यजाति भी वचन के साथ-साथ पवित्र आत्मा को पा सकते हैं। उन्होंने संभवत: कभी भी कुरनेलियुस के परिवार के लिए पवित्र आत्मा को ग्रहण करने की प्रार्थना नहीं की थी। अत: परमेश्वर ने अपनी शक्ति में होकर यह कार्य किया। परमेश्वर पतरस और उसके साथियों को अन्यजातियों के प्रति अपने अद्‌भुत अनुग्रह के बारे में बता रहा था।

किस चीज़ ने पतरस और अन्य यहूदी विश्वासियों को स्वीकार कराया कि कुरनेलियुस के घराने ने सही रूप में पवित्र आत्मा को पाया था? लूका ने लिखा,

''क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति-भांति की भाषा बोलते सुना'' (प्रेरित. 10:46)। पतरस ने स्पष्ट किया कि अन्यजातियों ने उसी तरह से पवित्र आत्मा को पाया था जैसे पिन्तेकुस्त के दिन एक सौ बीस ने उसे पाया था (देखें 10:47)।

इफिसुस
Ephesus

विश्वासियों के पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने का पांचवां विवरण प्रेरितों के काम 19 में पाया जाता है। इफिसुस से यात्रा करते हुए, प्रेरित पौलुस कुछ शिष्यों से मिला और उसने उनसे यह निम्नलिखित प्रश्न पूछा, ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया'' (प्रेरित. 19:2)?

नये नियम की अधिकांश पत्रियों को लिखने वाले व्यक्ति पौलुस, ने स्पष्टतया विश्वास किया कि यीशु पर विश्वास करना तो संभव है परन्तु पवित्र आत्मा को प्राप्त करना नहीं। नहीं तो वह इस तरह का प्रश्न नहीं करता।

उन लोगों ने उत्तर दिया कि उन्होंने पवित्र आत्मा के बारे में कभी नहीं सुना। वास्तव में, उन्होंने केवल यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से, जिसने उन्हें बपतिस्मा दिया था, मसीहा के आने के बारे में ही सुना था। पौलुस ने उसी क्षण उन्हें फिर से जल में बपतिस्मा दिया, और इस बार उन्होंने सच्चे मसीही बपतिस्मे का अनुभव किया। अन्त में पौलुस ने अपने हाथ उन पर रखे कि वे पवित्र आत्मा को प्राप्त करें:

> यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया। और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे। ये सब लगभग बारह पुरुष थे (प्रेरित. 19:5-7)।

पुन:, यह भी संभव है कि पवित्र आत्मा में बपतिस्मा उद्धार का अनुवर्ती था, पौलुस से मिलने से पूर्व चाहे इनका फिर से जन्म हुआ हो या नहीं। एक बार पुन: उनके पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के साथ चलने वाला चिन्ह अन्य भाषा में बोलना था (और भविष्यवाणी करना भी)।

विचार-मत
The Verdict

आइये पांचों उदाहरणों को एक बार फिर से देखें। इनमें से चार ऐसे हैं जिनमें उद्धार के पश्चात् पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का अनुभव मिला था।

इनमें से तीन में, पवित्रशास्त्र स्पष्टता से कहता है कि इसे पाने वाले अन्य भाषा

में बोले। इसके अतिरिक्त, पौलुस की हनन्याह के साथ भेंट में, पवित्र आत्मा में इसके बपतिस्मे के अनुभव का वास्तव में वर्णन नहीं किया गया, लेकिन हम जानते हैं कि तौभी वह अन्य भाषा में बोला। यह चौथी घटना को प्रस्तुत करता है।

शेष मामले में, सामरिया के विश्वासियों के पवित्र आत्मा को ग्रहण करने के पश्चात् कुछ अलौकिक घटना घटी क्योंकि शमौन ने पवित्र आत्मा को देने की शक्ति को खरीदने का प्रयास किया।

अत: प्रमाण पूर्णतया स्पष्ट है। आरम्भिक कलीसिया में, फिर से जन्म पानेवाले विश्वासियों ने पवित्र आत्मा के दूसरे अनुभव को प्राप्त किया, और ऐसा करने पर वे अन्य भाषा में बोले। इससे हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए, क्योंकि यीशु ने कहा कि उस पर विश्वास करनेवाले अन्य भाषा में बोलेंगे।

अत: हमारे पास अन्तिम प्रमाण है कि फिर से जन्म लेनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को पवित्र आत्मा के दूसरे कार्य का भी अनुभव लेना चाहिए-जिसे पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेना कहा जाता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक विश्वासी को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के पश्चात् अन्य भाषा में बोलना चाहिए।

पवित्र आत्मा में बपतिस्मे को कैसे ग्रहण करें

How to Receive the Baptism in the Holy Spirit

परमेश्वर के सभी दानों के समान, पवित्र आत्मा को भी विश्वास से प्राप्त किया जाता है (देखें गल. 3:5)। प्राप्त करने को विश्वास रखने के लिए, एक विश्वासी को सबसे पहले यह स्वीकार करना चाहिए कि यह उसके पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने की परमेश्वर की इच्छा होगी। आश्चर्य या संदेह करने पर वह इसे प्राप्त नहीं करेगा (देखें याकूब 1:6-7)।

किसी भी विश्वासी के पास इस पर विश्वास न करने का कोई कारण नहीं है कि उसके लिए यह परमेश्वर की इच्छा है कि वह पवित्र आत्मा पाए, क्योंकि यीशु ने इस संबन्ध में परमेश्वर की इच्छा को स्पष्ट रूप में व्यक्त किया है:

> सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़केवालों का अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा? (लूका 11:13)।

यीशु के होठों से निकलने वाली इस प्रतिज्ञा को परमेश्वर की प्रत्येक सन्तान को स्वीकार करना चाहिए कि यह परमेश्वर की उसके लिए इच्छा है कि वह पवित्र आत्मा पाए।

यही पद इस सच्चाई का भी समर्थन करता है कि पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाना उद्धार के पश्चात् होता है क्योंकि यीशु ने यहां परमेश्वर की सन्तानों से प्रतिज्ञा की

(वे ही लोग जिनके लिए परमेश्वर उनका ''स्वर्गीय पिता'' है) कि यदि वे पवित्र आत्मा मांगेंगे तो परमेश्वर उन्हें देगा। निस्संदेह, यदि उद्धार प्राप्त करने पर एक व्यक्ति को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के साथ-साथ उद्धार पाने का अनुभव मिलता तो यीशु की प्रतिज्ञा का कोई अर्थ नहीं होता। आधुनिक धर्मशास्त्रियों के विपरीत, यीशु ने विश्वास किया कि यह उन लोगों के लिए बहुत उपयुक्त है जो पहले से ही नया जन्म पाने के पश्चात् पवित्र आत्मा पाना चाहते हैं।

यीशु के अनुसार पवित्र आत्मा को प्राप्त करने की केवल दो ही शर्तें होनी चाहिए। सर्वप्रथम, परमेश्वर एक व्यक्ति का पिता होना चाहिए, जो कि वह है– यदि आपका फिर से जन्म हुआ है। दूसरा, आपको पवित्र आत्मा को मांगना चाहिए।

यद्यपि हाथ रखने के द्वारा पवित्र आत्मा को प्राप्त करना पवित्रशास्त्रीय है (देखें प्रेरित. 8:17; 19:6), तौभी यह बिल्कुल आवश्यक भी नहीं है। कोई भी मसीही अपने प्रार्थना के स्थान पर स्वयं पवित्र आत्मा को प्राप्त कर सकता है। उसे मांगने, विश्वास से प्राप्त करने और आत्मा द्वारा दिये शब्दों से अन्य भाषा में बोलने की ज़रूरत है।

सामान्य भय
Common Fears

कुछ लोग चिन्ता करते हैं कि यदि वे पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करें, तो वे स्वयं को इसके बजाय दुष्ट आत्माओं के लिए खोल सकते हैं। इस तरह की चिन्ता का यद्यपि कोई आधार नहीं है। यीशु ने प्रतिज्ञा की:

> तुम में से ऐसा कौन पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी मांगे, तो उसे पत्थर दे: या मछली मांगे, तो मछली के बदले उसे सांप दे या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छु दे? सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़केवालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों की पवित्र आत्मा क्यों न देगा? (लूका 11:11-13)।

यदि हम पवित्र आत्मा मांगें तो परमेश्वर हमें पवित्र आत्मा देगा, और हमें इसके अलावा और भी किसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए भयभीत नहीं होना चाहिए।

कुछ चिन्ता करते हैं कि उनके अन्य भाषाओं में बोलने से यह पवित्र आत्मा द्वारा दी गई अलौकिक भाषा की तुलना में मूर्खता की भाषा हो जाएगी। यदि आप पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने से पहले एक उचित भाषा की खोज करने का प्रयास करें तो यह असंभव होगा। दूसरी ओर, आपको समझना चाहिए कि अन्य भाषा में बोलने पर आप अपने होठों, जीभ और ध्वनि तंत्रिका का प्रयोग करेंगे। पवित्र आत्मा आपके लिए बोलता नहीं है–वह केवल आपको शब्द देता है। वह हमारा *सहायक* है, न कि

हमारा *करनेवाला।* आपको उसी तरह से बोलना चाहिए, जैसा बाइबल सिखाती है: और *वे* सब पवित्र आत्मा से भर गए,

> *और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी,* वे अन्य भाषा बोलने लगे (प्रेरित. 2:4, पर बल दिया गया है)।
>
> और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे (प्रेरित. 19:6, पर बल दिया गया है)।

एक विश्वासी के पवित्र आत्मा के दान को मांगने के पश्चात् उसे अन्य भाषा में बोलने के लिए विश्वास और अपेक्षा करनी चाहिए। पवित्र आत्मा को विश्वास से प्राप्त करने के कारण, प्राप्तकर्त्ता को किसी भी तरह की विशिष्ट भावनाओं या शारीरिक भावों का अनुभव करने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उसे अपना मुंह खोलकर उन नये शब्दों और अक्षरों को बोलना आरम्भ करना चाहिए जो उस पवित्र आत्मा द्वारा दी गई भाषा को बनाते हैं। जब तक विश्वासी *विश्वास से बोलना* आरम्भ न करे, उसके मुंह से कोई शब्द नहीं निकलेगा। उसे केवल बोलना है, और पवित्र आत्मा ही उसे शब्द देगा।

बोलने का स्रोत

The Source of the Utterance

पौलुस के अनुसार, जब एक विश्वासी अन्य भाषा में प्रार्थना करता है, तो उसका मन नहीं बल्कि उसका आत्मा प्रार्थना कर रहा होता है:

> इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। सो क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा (1कुरि. 14:14-15)।

पौलुस ने कहा कि जब उसने अन्य भाषा में प्रार्थना की, उसकी बुद्धि फलहीन थी। अर्थात् उसकी बुद्धि का इसमें कोई हिस्सा नहीं था, और वह अन्य भाषा में जो प्रार्थना कर रहा था उसे वह नहीं समझा था। अत:, सारा समय अन्य भाषा में प्रार्थना करने की अपेक्षा यह समझे बिना जो वह कह रहा था, पौलुस ने अपनी स्वयं की भाषा में अपनी बुद्धि के साथ प्रार्थना करने में भी समय बिताया। दोनों तरह की प्रार्थना करने और गीत गाने का स्थान है, और हमें भी पौलुस के संतुलित उदाहरण का अनुसरण करना होगा।

इस पर भी ध्यान दें कि पौलुस के लिए अन्य भाषा में बोलना उसी तरह से अपनी इच्छा का विषय था जैसे वह अपनी स्वयं की भाषा बोलता था। उसने कहा, *''मैं*

आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा और *मैं* बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा।'' आलोचक प्राय: यह दावा करते हैं कि यदि आधुनिक भाषाओं में बोलना वास्तव में आत्मा की ओर से एक दान था, तौभी एक व्यक्ति का इस पर नियंत्रण नहीं होगा, अन्यथा वह परमेश्वर को नियंत्रित करने का दोषी होगा। लेकिन इस तरह का विचार निराधार है। आधुनिक और प्राचीन भाषा का बोलना उसी तरह से व्यक्ति के नियंत्रण में आता है जैसा परमेश्वर ने इसको योजनागत किया है। आलोचक इसी के साथ-साथ यह भी कहते हैं कि लोगों का अपने हाथों पर जिन्हें *वास्तव में* परमेश्वर द्वारा बनाया गया है, कोई नियंत्रण नहीं है, और यह कि जो लोग अपने हाथों का प्रयोग करने का निर्णय स्वयं लेते हैं, वे परमेश्वर को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं।

एक बार आपके पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के पश्चात् आप आसानी से स्वयं पर यह प्रमाणित कर सकते हैं कि आपकी जुबान में शब्द आपकी बुद्धि की बजाय आपकी आत्मा से आते हैं। सर्वप्रथम, इस पुस्तक को पढ़ते समय में ही किसी के साथ वार्त्तालाप को बनाए रखने का प्रयास करें। आप पाएंगे कि आप दोनों ही काम एक समय पर नहीं कर सकते हैं। तथापि, आप यह पाएंगे कि आप इस पुस्तक को पढ़ते समय में भी अन्य भाषा में बोल सकते हैं। इसका कारण यह है कि आप अन्य भाषा को बोलने में अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं कर रहे हैं– क्योंकि शब्द आपकी आत्मा से आते हैं। अत: प्रार्थना करने के लिए आत्मा का प्रयोग करने पर आप अपनी बुद्धि का प्रयोग पढ़ने और समझने के लिए कर सकते हैं।

अब जबकि आपका बपतिस्मा पवित्र आत्मा में हो गया है

Now That You Are Baptized in the Holy Spirit

उस प्राथमिक कारण को स्मरण रखें जिसके कारण परमेश्वर ने आपको पवित्र आत्मा दिया–आत्मा के फलों और दानों की अभिव्यक्ति के द्वारा आपको अपना गवाह बनाने के लिए प्राथमिक रूप से समर्थ करना (देखें 1कुरि. 12:4-11; गल. 5:22-23)। एक मसीही के समान जीवन जीने और संसार को उसके (परमेश्वर के) प्रेम, आनन्द और शांति को दिखाने के द्वारा, परमेश्वर आपका प्रयोग दूसरों को अपने निकट लाने के लिए करेगा। अन्य भाषा में बोलने की योग्यता उन 'जीवित जल की नदियों' में से एक है जिसे आपके भीतर से बहना चाहिए।

यह भी स्मरण रखें कि पृथ्वी के *सभी* लोगों तक सुसमाचार के साथ पहुंचने के लिए समर्थ करने को परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा दिया है (देखें प्रेरित. 1:8)। अन्य भाषा में बोलते समय हमें जानना चाहिए कि जिस भाषा को हम बोल रहे हैं वह कुछ पिछड़ी जातियों या विदेशी राष्ट्रों की भाषा हो सकती है। प्रत्येक समय अन्य भाषा में प्रार्थना करते हुए, हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक भाषा को बोलने वाला यीशु के बारे में सुने। हमें परमेश्वर से पूछना चाहिए कि यीशु की महान आज्ञा की पूर्ति में वह हमें कैसे जोड़ना चाहता है।

अन्य भाषा में बोलना कुछ ऐसी चीज़ है जिसे हमें जितना अधिक संभव हो सके करना चाहिए। पौलुस, एक आत्मिक बिजलीघर, ने लिखा, ''मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि मैं तुम सब से अधिक अन्य अन्य भाषा में बोलता हूं'' (1कुरि. 14:18)। उसने ये शब्द उस कलीसिया को लिखे जिसने अन्य भाषा में बोलने का अधिक कार्य किया था (यद्यपि सामान्यता गलत समयों पर)। इसी कारण पौलुस ने उनसे अधिक आत्मा में बोलने का कार्य किया था। अन्य भाषा में प्रार्थना करना हमारी उस आत्मा के प्रति सचेत बने रहने में सहायता करता है, जो हमारे साथ रहता है, और जैसा पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 5:17 में सिखाया, वह हमारे लिए ''निरन्तर प्रार्थना'' करता रहता है।

पौलुस ने यह भी सिखाया कि अन्य भाषा में बोलना विश्वासी की उन्नति करता है (देखें 1कुरि. 14:4)। इसका अर्थ है कि यह आत्मिक रूप से हमारा निर्माण करता है। अन्य भाषा में प्रार्थना करने के द्वारा, हो सकता है कि जिसे हम पूरी तरह से न समझते हों, उसी से हम अपने भीतरी मनुष्यत्व को मज़बूत कर सकते हों। अन्य भाषा में बोलना प्रत्येक विश्वासी के आत्मिक जीवन में दैनिक सम्पन्नता को लानेवाला होना चाहिए न कि यह आरम्भ में पवित्र आत्मा से भरे जाने का एक-समय का अनुभव होना चाहिए।

एक बार आपके पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के पश्चात् मैं आपको प्रतिदिन परमेश्वर के साथ प्रार्थना करने में समय बिताने को अन्य भाषा का प्रयोग करने को प्रोत्साहित करता हूं। यह आपके आत्मिक जीवन और विकास को बड़े रूप में बढ़ाएगा।

कुछ सामान्य प्रश्नों के जवाब

Answers to a Few Common Questions

क्या हम यह निश्चित रूप में कह सकते हैं कि जो कभी भी अन्य भाषा में नहीं बोले उनका पवित्र आत्मा में बपतिस्मा नहीं हुआ है? व्यक्तिगत रूप से मैं ऐसा नहीं सोचता।

मैंने जब भी लोगों के लिए पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने की प्रार्थना की है, मैंने उन्हें हमेशा ही अन्य भाषा में बोलने की अपेक्षा करने को प्रोत्साहित किया है, और संभवत: उनमें से 95% ने मेरे उनके लिए प्रार्थना करने के एक सैकेण्ड पश्चात् ही ऐसा किया है। वर्षों से इन लोगों की संख्या हज़ारों में हो गई होगी।

तौभी, मैं यह कभी नहीं कहता कि एक मसीही जिसने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा लेने के लिए प्रार्थना की और जो अन्य भाषा में नहीं बोला, उसका पवित्र आत्मा में बपतिस्मा नहीं हुआ है, क्योंकि आत्मा के बपतिस्मे को विश्वास से प्राप्त किया जाता है और अन्य भाषा में बोलना ऐच्छिक है। यदि मुझे एक ऐसे विश्वासी के साथ बात करने का अवसर मिले जिसने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने के लिए प्रार्थना

की लेकिन जो कभी भी अन्य भाषा में नहीं बोला, मैं उस व्यक्ति को इस विषय के संबन्ध में प्रेरितों के काम में दिये सभी पदों को दिखाऊंगा। इसके बाद मैं उस विश्वासी को यह भी दिखाऊंगा कि पौलुस ने लिखा कि अन्य भाषा को बोलते या न बोलते समय वह नियंत्रण में रहता था। पौलुस के समान मैं भी जब चाहूं अन्य भाषा में बोल सकता हूं और मैं अन्य भाषा में कभी न बोलने का निर्णय भी ले सकता हूं। इस तरह से, मैंने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने के बाद कभी भी आत्मा के शब्दों के साथ सहयोग न करते हुए अन्य भाषा में नहीं बोला था।

अत: मुझे एक बार फिर एक ऐसे विश्वासी से बात करने का अवसर मिला जिसने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने के लिए विश्वास में होकर प्रार्थना की, लेकिन जो कभी भी अन्य भाषा में नहीं बोला, मैं उसे यह नहीं कहता (न ही मेरा यह मानना है) कि उसका पवित्र आत्मा में बपतिस्मा नहीं हुआ है। मैं उससे केवल इतना कहता हूं कि अन्य भाषा में बोलना एक ऐसी चीज़ नहीं है जो पवित्र आत्मा को हमसे अलग करती है। मैं बताता हूं कि पवित्र आत्मा शब्द देता है, लेकिन हमें उसी तरह से बोलना है जैसे एक व्यक्ति अपनी भाषा को बोलता है। इसके बाद मैं उस व्यक्ति को पवित्र आत्मा के साथ सहयोग करने और आत्मा में बोलना आरम्भ करने को प्रोत्साहित करता हूं। उनमें से लगभग सभी जल्द ही बिना किसी बाधा के ऐसा करते हैं।

क्या पौलुस ने नहीं लिखा कि सभी अन्य भाषा में नहीं बोलते हैं?

Didn't Paul Write that Not All Speak with Tongues?

पौलुस के लयबद्ध प्रश्न, ''क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं?'' (1कुरि. 12:30) के लिए संभावित जवाब ''नहीं'' है जो कि शेष नये नियम के साथ मेल खाने वाला होना चाहिए। उसका प्रश्न आत्मिक दानों के संबन्ध में उसके निर्देशों के साथ पाया जाता है, जिसमें सभी को केवल आत्मा की इच्छा पर व्यक्त किया गया है (देखें 1कुरि.12:11)। पौलुस विशिष्ट रूप से ''अन्य भाषा के कई तरह के आत्मिक वरदानों'' के बारे में लिख रहा था (देखें 1कुरि. 12:10)। पौलुस के अनुसार यह अन्य भाषा का अर्थ बताने के आत्मिक वरदान के साथ-साथ चलता है। यह आत्मिक दान वह नहीं था जिसे कुरिन्थ के रहने वाले सदैव अपनी कलीसिया में प्रगट करते थे, क्योंकि अर्थ बताए बिना सार्वजनिक रूप में अन्य भाषा में बोलते थे। हमें पूछना चाहिए, *पवित्र आत्मा एक सार्वजनिक सभा में अर्थ बताने का दान दिये बिना एक व्यक्ति को अन्य भाषा में बोलने* का दान क्यों देगा? जवाब है कि वह ऐसा करेगा। अन्यथा पवित्र आत्मा किसी ऐसी चीज़ को बढ़ावा देगा जो परमेश्वर की इच्छा में नहीं है।

कुरिन्थ के लोग अपनी कलीसियाई सभाओं में, अन्य भाषा में *प्रार्थना* कर रहे थे, उसका अर्थ बताए बिना। इस तरह से हम यह जान पाते हैं कि आत्मा में बोलने के दो भिन्न उपयोग हैं। पहला, अन्य भाषा में प्रार्थना करना है, जिसके बारे में पौलुस ने कहा कि वह निजी रूप में होना चाहिए। आत्मा में बोलने की यह उपयोगिता अर्थ बताने के साथ नहीं जुड़ी है, जैसा पौलुस ने लिखा, ''मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती'' (1 कुरि. 14:14)। निस्संदेह, पौलुस अन्य भाषा में बोलते समय सदैव यह नहीं जानता था कि वह क्या बोल रहा है। इस भाग में उसकी कोई समझ नहीं थी; न ही उसकी कोई व्याख्या थी।

तथापि, अन्य भाषा में बोलने का एक लाभ कलीसिया की सार्वजनिक सभा के लिए है जो सदैव अन्य भाषा का अर्थ बताने के दान के साथ जुड़ा होता है। यह उस समय होता है जब पवित्र आत्मा अपनी इच्छा से किसी व्यक्ति पर उतरकर उसे यह दान देता है। व्यक्ति सार्वजनिक रूप में बोलता है और उसके बाद उसका अर्थ बताया जाता है। तौभी, परमेश्वर प्रत्येक का प्रयोग इस तरह से नहीं करता। इसी कारण पौलुस ने लिखा कि सभी अन्य भाषा में नहीं बोलते। सभी को अचानक से ही परमेश्वर के द्वारा प्रयोग नहीं किया जाता, अन्य भाषा के दान को उसी के साथ दिये जाने पर, जिस तरह से परमेश्वर अन्यभाषा का अर्थ बताने वाले दान के लिए सभी का प्रयोग नहीं करता। यही पौलुस के लयबद्ध प्रश्न ''क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं'' का शेष पवित्रशास्त्र जो सिखाता है उससे मेल करने का एकमात्र तरीका है।

मैं पौलुस के समान जब चाहे अन्य भाषा में बोल सकता हूं। इसलिए न तो पौलुस और न ही मैं यह कह सका कि अन्य भाषा में बोलना ''आत्मा की इच्छा'' से होता है। यह *हमारी* इच्छा से होता है। अतः जो हम कर रहे होते हैं जब कभी भी इच्छा करते हैं, वह अन्य भाषा में बोलने का दान *नहीं हो सकता* जो केवल ''आत्मा की इच्छा'' पर पूरा होता है। इसके अतिरिक्त, पौलुस, मेरे समान, निजी रूप में बिना यह जाने कि वह क्या कर रहा है, अन्य भाषा में बोला, अन्य भाषा में बोलने का दान *नहीं हो सकता* जिसके बारे में उसने 1कुरिन्थियों में लिखा है, जो उसके अनुसार हमेशा अन्य भाषा का अनुवाद करने के वरदान के साथ-साथ रहेगा।

बहुत ही कम अवसरों पर मैं सार्वजनिक सभाओं में अन्य भाषा में बोला था और ऐसा केवल तब ही हुआ जब आत्मा ने ऐसा करने को मुझे प्रेरित किया था। यद्यपि मैं कलीसिया में (कुरिन्थियों के समान) बिना अनुवाद के अन्य भाषा में जब चाहे प्रार्थना कर सकता था। जब कभी मुझे लगा कि पवित्र आत्मा उस दान के लिए मुझ पर आया तो उसके लिए हमेशा उसका अर्थ बताना भी रहा जिससे देह की उन्नति हुई।

अन्त में, हमें बाइबल का अनुवाद समन्वय के साथ करना चाहिए। ऐसा निष्कर्ष

निकालने वाले 1 कुरिन्थियों 12:30 में पाए जानेवाले पौलुस के लयबद्ध प्रश्न के अनुसार यह कहते हैं कि सभी विश्वासियों को अन्य भाषा में नहीं बोलना चाहिए, ऐसा कहकर वे वास्तव में पवित्रशास्त्र के अन्य कई पदों की उपेक्षा कर रहे होते हैं जो उसके अर्थ बताने के साथ मेल नहीं खाते। अपनी गलती के कारण वे परमेश्वर की ओर से एक बड़ी आशीष से चूक रहे हैं।